Dr.



श्रसाधारण EXTRAORDINAR**४**

भाग II—-अवस 3—-उपलब्द (ii)ेें रि PART II—Section 3—Sub-section श्री

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

#io 521] No. 521] मई विल्ली, सोमधार, दिनम्बर 30, 1974/पौष 9, 1896

NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 30, 1974/PAUSA 9, 1896

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed

as a separate compilation

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

NOTIFICATION

INCOME-LAX

New Deihi, the 30th December 1974

- S.O. 738(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 295 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and rule 92 of the Second Schedule to that Act, the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Income-tax (Certificate Proceedings) Rules, 1962, namely:—
- 1. These rules may be called the Income-tax (Certificate Proceedings) (Amendment) Rules, 1974.
 - 2. In the Income-tax (Certificate Proceedings) Rules, 1962-
 - (a) in rule 55B,---
 - (i) in clause (a) of sub-rule (2), for the words "a legal practitioner", the words "an authorised representative" shall be substituted;
 - (ii) after sub-rule (7), the following sub-rule shall be inserted, namely:—
 - "(8) Every appeal shall be disposed of by the Tax Recovery Commissioner as expeditiously as possible and endeavour shall be made to dispose of the appeal within six months from the date on which it is presented.";
 - (b) in rule 62,—
 - (i) in sub-rule (1), for the words "any legal practitioner who is entitled to practice in any civil court in India", the words "an authorised representative" shall be substituted;
 - (ii) after sub-rule (1), the following Fxplanation shall be inserted, namely:— 'Explanation.—For the purposes of this sub-rule, "authorised representative" shall have the meaning assigned to it in clauses (iii) to (vii) of sub-section (2) of section 288.'.

[No. 807/F. No. 142(38)/74-TPI]

O. P. BHARDWAJ,

Secv. Central Board of Direct Taxes.

केल्ब्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

ग्रधिसूचना

श्राप-कर

नई दिव्दी, 30 दिसम्बर, 1974

अ(० आ१० 738(ब्र) ---केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, श्राय कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 295 की उाधारा (1) तथा उक्त अधिनियम की दिनीय अनुसूची के नियम 92 द्वारा प्रदन शक्तियों का प्रयोग करते हुए, श्राय-कर (प्रमाण-पत्न कार्यवाहियां) नियम, 1962 में और मंगोधन करने के लिए निम्नलिखन नियम बनाता है, श्रर्थात:--

- 1. इन नियमों का नाम श्राय-कर (प्रमाण-तत्न कार्यवाहियां) (संणोधन) नियम, 1974 है ।
 - 2. श्राय-कर (प्रमाण-पत्न कार्यवाहियां) नियम, 1962 में---
 - (क) नियम 55ख में,——.
 - (i) उपनियम (2) के खण्ड (क) में, "विधि व्यवसापी" शब्दों के स्थान पर "प्राधिकृत प्रतिनिधि" शब्द रखे जाएंगे;
 - (ii) उपनियम (7) के पश्चात निम्नलिखित ग्रन्तःस्थापिन किया जाएगा, ग्रर्थान् ---
 - "(8) कर वसूत्री आयुक्त द्वारा प्रत्येक श्रापील का निपटारा यथासम्भव शीघता से किया जाएगा और जिल नारीख की अपील पेश की गई हो उस से छह मास के भीतर पर्याल का निपटारा करने का प्रयास किया जाएगा।";
 - (ख) नियम 62 में,---
 - (i) उपतियम (1) में ''कोई विधि व्यवसायी जो भारत के किसी सिविल न्यायालय में विधि व्यवसाय करते का हकदार हो'' शब्दों के स्थान पर ''प्राधिकृत प्रतिनिधि'' शब्द पक्षे जाएंगे ;
 - (ii) उपियम (i) के पशचात् निम्नलिखित स्पर्धाकरण, प्रन्तःस्थापित किया जाएगा, प्रथीत्
 - "स्यब्दोक्शरण.——इस उपनियम के प्रयोजनों के लिए "प्राधिकृत प्रतिनिधि" का बही $\pi \hat{i}$ होगा जो उनकी धारा 288 की उपनारा (2) के खण्ड (ii) से लेकर (vii) तक में समन्दिष्ट है ।"

[मं० 807/र्फि०सं०142(38)/74—टी० पी० एल०] भां० पी० भारद्वाज.

सचिव, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ।